दिनांक - 27-03-2020

कॉलेज का नाम - मारवारी कॉलेज दरभंगा

वर्ग - B.A पार्ट (II) प्रतिष्ठा द्वितीय खंड इतिहास

मध्य कालीन इतिहास के स्त्रोत

मध्य काल के स्त्रोतो को दो भागो में बाटा गया है

1) पूर्व मध्य काल (2) उत्तर मध्य काल

1) पूर्व मध्य काल की अवधि :- मध्य काल की अवधि 647 से 1226 तक रही इस अवधि मे अनेक रचनाएं लिखी गई। पुरा तात्विक स्त्रोत मे भवन, सिक्के, मुर्ती, कला, मंदिर मस्जिद आदि शामिल है। रचनाओ और स्त्रोतो मे इतिहासिक घटनाओ का विस्तृत विवरण मिलता है। हर्ष वर्धन के काल का विवरण हर्ष चरित्र में सत्ती प्रथा को हटाने की चर्चा मिलती है। ठीक उसी तरह आगे 712 ई० तक अरबो का आक्रमण जिसका विवरण अली अहमद

द्वारा लिखित चचनामा मिलता है। जिसका अरबी अनुवाद अबू बकर अल कूफी ने किया था जिसमें मोहम्मद बीन कासीम के नेत्रितत्व में बुगदाद के गवर्नर हजजाज बीन युसुफ के नेत्रितत्व में अरबो का आक्रमण सिंध पर हुआ। जिसका विस्तृत विवरण इस ग्रंथ में मिलता है वहीं भवन निर्माण क्षेत्र में दरवीर नागर बैसर शैली की मंदिर कई तरह के भवन चोल प्राशासन के भवन खजुराहो के मंदिर वही सलतानत काल के भवनो और अनेक शैलियों में पतड़ा द्वेरा का विकास अर्थात दो प्रकार के चट्टानो का सम्मिलन अर्थात दो प्रकार के पत्थरो पेड़ रंगों का मेल जुल पर विशेष ध्यान दिया गया। भवनो को देखने पर उस समय के कलाकृति और उनकी गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया गया। जो कलाकृति के उतकृष्ट उदाहरण मि

जुलते है।
यह सारा स्त्रोत प्राथमिक (Primery Source) के रूप में देखे जाते है। सलतानत काल में आलाई दरवाजा कुतुब मीनार कुवातुल ईस्लाम मस्जिद आदि सलतानत काल की कलाकृति की जानकारी प्राथमिक स्त्रोत के रूप में देता है। दरभंगा मे स्थित शाही मस्जिद मोहम्मद बीन तुगलक के समय के उत कृष्ट उदाहरण है।
(Secondary Source) के रूप में जो स्त्रोत है राज तारंगानी जिसमे कश्मिर का विवरण मिलता है। जैनुल आबिदीन द्वारा निर्मीत वुलर झील मे जैना लका अर्थात नदी पर तैरता हुआ शहर जो अपने कलाकृति का विशिष्ट उदाहरण है। जिसमें पाद टिप्पणी अर्थात (Foot Notce) की चर्चा मिलती है। साथ ही कई ग्रंथो का प्रसंग भी मिलता है। कलक

शंदी के अदाबुल हर्ब सुजाअत यह एक पद्धाति का ग्रंथ है। जो मागाजी अर्थात युद्ध पद्धाति और उसकी तकनीक और हर्ब अर्थात में युद्ध में काम आने वाले अस्त्र शास्त्र का विवरण मिलता है। जैसे मिनजामिक यह किला भेदना का यंत्र है जो सक्रिय अर्थात गियर सिस्टम में चलने वाला यंत्र का उदाहरण ठीक उसी तरह एक बार में कई तीर एक साथ चलाने के लिए अर्रादा आदि चीजो का प्रयोग किया गया। जिया बरनी द्वारा लिखित तारिखे फिरोज शाही तुगलक वंश के शासको का विस्तृत विवरण देता है। फिर मोहम्मद बीन तुगलक का राजधानी परिवर्तन फिरोज शाह तुगलक द्वारा लगाए जान उसर अर्थात फल पर लगाया जाने वाले कर का विस्तृत विवरण मिलता है। सीरी को किला तुगलक बाद का किला आदि चीजो की जानकारी तारिखे

फिरोज शाही से मिलती है। भूमि के उपज के आधार पर वर्गीकरण इंआम वक्फ मिल्क और जिरात आदि की जानकारी इसी ग्रंथ से प्राप्त होती है।